ऑटिज़्म क्या है ?

positive partnerships

Working together to support school-aged students on the autism spectrum

ऑटिज़्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर (स्वलीनता स्पेक्ट्रम विकार) जिसे ऑटिज़्म भी कहते हैं, जन्म के समय या उसके शीघ्र बाद आरंभ होने वाली एक जीवन-भर की विकलांगता है। ऑटिज़्म व्यक्ति के सीखने के ढंग और वह अन्य लोगों और आस-पास के वातावरण से किस तरह क्रियालाप करता है, इस पर प्रभाव डालता है।

इसके लक्षणों में शामिल हैं:

- सामाजिकता, भाषा और संवादशीलता की कला के विकास में भिन्नता।
- बहुत कम चीज़ों में रुचि और एक ही प्रकार के व्यवहार को बार-बार करना।
- संवेदनाओं संबंधी असामान्यताएँ, जैसे कि ध्वनियों से बच कर रहना या इधर-उधर अत्यधिक चलना-फिरना।
- अन्य बच्चों के मुक़ाबले सीखने और खेल-कूद में भाग लेने में भिन्नता।

जिन लोगों को ऑटिज़्म है, उनके लक्षणों में परस्पर कुछ समानताएँ हो सकती हैं परन्तु वे सभी पूरी तरह एक जैसे नहीं होते, इसी कारण इसे ऑटिज़्म स्पेक्ट्रम (स्वलीनता स्पेक्ट्रम) कहते हैं।

लोग किसी भी आयु में ऑटिज़्म से प्रभावित हो सकते हैं और उनमें अनेक प्रकार की कुशलताएँ, व्यवहार, सामाजिक बोधक्षमताएँ और संवादक्षमताएँ देखने में आती हैं।

ऑटिज़्म का पता कैसे लगाया जाता है ?

आम तौर पर एक बाल-रोग विशेषज्ञ, मनोवैज्ञानिक या विशेषज्ञ दल व्यक्ति का अवलोकन करता है और उसके माता-पिता से तथा कभी-कभार अध्यापकों से बातचीत करता है। वे लोग बच्चों को कुछ करने के लिए भी कह सकते हैं ताकि वे देख सकें कि वे सीखते कैसे हैं। पेशेवर व्यक्ति कुछ साधनों और निर्धारणों के द्वारा बच्चे की कुछ मानदंडों के अनुरूप होने की जाँच करते हैं और वे ऑटिज़्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर की पहचान कर सकते हैं।

ऑटिज़्म कितना आम है ?

अनुसंधान के अनुसार 100 में से 1 व्यक्ति में ऑटिज़्म देखने में आता है और यह स्त्रियों की अपेक्षा पुरुषों में अधिक पाया जाता है।

कारण

ऑटिज़्म होने का कोई कारण ज्ञात नहीं है। अनुसंधान के अनुसार आनुवंशिक और परिस्थितियों संबंधी घटकों का (जन्म से पूर्व और जन्म के बाद, दोनों ही) ऑटिज़्म होने के कारण से संबंध हो सकता है। अनुसंधान से यह भी पता चला है कि हर व्यक्ति में इसका कारण भिन्न हो सकता है ।

ऑटिज़्म के मुख्य लक्षण

संवादशीलता

संवादशीलता अपनी आवश्यकताओं और माँगों को बता पाने तथा औरों को समझने की क्षमता है। ऑटिज़्म से ग्रस्त व्यक्ति बोल तो सकते हैं लेकिन:

- उन्हें दूसरों को समझने में कठिनाई होती है
- वे प्रश्नों और टिप्पणियों का शाब्दिक अर्थ ही समझते हैं
- उन्हें रूपक अलंकार वाले और अनेक अर्थ वाले शब्द आसानी से समझ नहीं आते
- उन्हें दूसरों से वार्तालाप आरंभ करना या उसे जारी रखना कठिन लगता है
- वे एक वयस्क की भाँति बात करते हैं
- वे कुछ ही शब्दों और वाक्याँशों को बार-बार दोहराते हैं।

संवादशीलता संबंधी कठिनाइयाँ उनके सामाजीकरण पर प्रभाव डालती हैं।

सामाजीकरण

सामाजीकरण का अर्थ है कि व्यक्ति समुदाय के अन्य लोगों से किस तरह के संबंध रखता है। ऑटिज़्म से ग्रस्त व्यक्तियों में सामाजिक नियमों का ज्ञान कम हो सकता है, वे अकेले खेलना पसंद करते हैं, वे नहीं जानते कि वे किसी खेल/गतिविधि में कैसे भाग ले सकते हैं और उनका व्यवहार कभी-कभी देखने में अभद्र भी लग सकता है।

व्यवहार

ऑटिज़्म से ग्रस्त व्यक्तियों के अक्सर अपने अलग तरीके होते हैं और वे कुछ गतिविधियों को बार-बार दोहराते हैं। ऐसा करने से उन्हें शाँति और व्यवस्था का आभास होता है। ऑटिज़्म से ग्रस्त अधिकांश व्यक्ति:

- नियमित दिनचर्या चाहते हैं
- परिवर्तन को पसंद नहीं करते
- किसी एक विषय में अत्यधिक रुचि रखते हैं
- असामान्य शारीरिक गतिविधियों का प्रदर्शन कर सकते हैं, जैसे कि हाथों को लगातार हिलाते रहना।

सेंसरी प्रोसेसिंग (इन्द्रियों से प्राप्त जानकारी के प्रति प्रतिक्रिया)

सेंसरी प्रोसेसिंग का मतलब है कि हमारा मस्तिष्क इन्द्रियों से जानकारी कैसे प्राप्त करता है और फिर क्या प्रतिक्रिया करता है। सेंसरी प्रोसेसिंग में भिन्नता का बच्चे द्वारा घर, विद्यालय और समुदाय में सीखने और ठीक व्यवहार करने की क्षमता पर प्रभाव पड़ता है। ऑटिज़्म से ग्रस्त व्यक्ति निम्नलिखित परिस्थितियों में बहुत तीखी या सामान्य से कम प्रतिक्रिया का प्रदर्शन कर सकते हैं:

- शोर
- स्पर्श
- देखी गई जानकारी
- गंध
- स्वाद
- उनके आस-पास होने वाली गतिविधि
- उनके आस-पास के लोग और वस्तुएँ।

ऑटिज़्म के कारण सीखने की क्षमता पर क्या प्रभाव पड़ता है ?

ऑटिज़्म से ग्रस्त विद्यार्थियों में अनेक क्षमताएँ देखी जाती हैं, इनमें शामिल हैं:

- अच्छी याददाश्त
- दिनचर्याओं और नियमों का पालन
- सदा प्रेरित रहना और कुछ विषयों के बारे में अत्यधिक ज्ञान
- किसी बात को देख कर आसानी से सीख लेना
- ईमानदारी।

ऑटिज़्म से ग्रस्त हर बच्चा भिन्न होता है लेकिन अक्सर निम्नलिखित मामलों में उन्हें परेशानी आती है:

- परिवर्तन
- किसी बात पर ध्यान देना या एकाग्रचित्त रहना
- सामाजिक गतिविधियाँ
- भावनात्मकता
- मांसपेशियों और गतिविधियों का समन्वय
- दृष्टि को एक ही जगह पर टिकाए रखना
- बात का मतलब समझना
- एक परिस्थिति में सीखी हुई कुशलता का किसी दूसरी परिस्थिति में इस्तेमाल करना
- सेंसरी प्रोसेसिंग
- घटनाक्रम को समझना (घटनाओं के क्रम को समझना)
- योजना बनाना और व्यवस्थापन करना
- जो काम उन्हें कम पसंद हैं उनको पूरा करने के लिए प्रेरित होना

उनकी सामर्थ्य के क्षेत्रों पर जोर देना उन्हें पढ़ाने की एक अच्छी कार्यनीति है न कि उन्हें कठिन लगने वाले क्षेत्रों में उनकी क्षमता को बढ़ाना।

संदर्भ

MacDermott, S., Williams, K., Ridley, G., Glasson, E. & Wray, J. (2007). The prevalence of autism in Australia. Can it be established from existing data? A report for the Australian Advisory Board on Autism Spectrum Disorders. www.autismaus.com.au से 23 जनवरी 2008 को लिया गया।

The Positive Partnerships initiative is funded by the Australian Government Department of Education and Training through the Helping Children with Autism Package. The views expressed in this publication do not necessarily represent the views of the Australian Government or the Australian Government Department of Education and Training.

autism spectrum AUSTRALIA